DAY-8 19-12-2025 – शुक्रवार - LEVEL-2 A&B

100 DAYS ACTION PLAN-HINDI HAMARI-HINDI.COM

8	19/12/25 (शुक्रवार)	उपचारात्मक कालांश	कण कण का अधिराकी (सारांश)	-

भाग -III Q.NO.12 - 8M

प्र. दिनकर जी ने भाग्यवाद के छल का खंडन कैसे किया है? 'कण-कण का अधिकारी' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।"

परिचय : यह प्रश्न " कण-कण का अधिकारी " पाठ से दिया गया है।

पाठ का नाम : कण-कण का अधिकारी
विधा : कहानी
लेखक : डॉ. रामधारी सिंह दिनकर जी
जीवन काल : 1908-1974
प्रमुख रचनाएँ : ऊर्वशी, कुरुक्षेत्र, रेणुका आदि।
पुरस्कार : ज्ञानपीठ - ऊर्वशी

सारांश : ★ इस कविता में कवि ने मेहनत करने वाले व्यक्तियों की महानता के बारे में कहा है।

★ एक व्यक्ति पाप से धन कमाता है तो भाग्यवाद के छल से दूसरा भोगता है।

★ नर समाज का भाग्य, श्रम और भुजबल है।

★ श्रमिक के सम्मुख भूमि और आकाश झुकते हैं।

★ मेहनत ही सफलता की कुँजी है।

★ जो श्रमजल देकर मेहनत करता है उसे आगे रखना है।

★ श्रमिक व्यक्ति ही कण–कण का अधिकारी है।

उपसंहार : जो व्यक्ति परिश्रम करके सफलता प्राप्त करता है। यह सारा संसार श्रम पर ही टिका हुआ है।